"कलिजुग में हरि की बख्शीश"

• अगम अगोचर दरस तेरा सो पाए जिस मसतकि भाग ।
आपि कृपालि कृपा प्रभ धारी सतिगुर बखसिआ हरि नाम ।1।

अर्थ:- अगम्य पहुँच से परे प्रभु ! तू मनुष्यों की ज्ञान - इंद्रिय की पहुँच से परे है, तेरे दर्शन वही मनुष्य करता है, जिसके मस्तक के भाग्य जाग पड़ते हैं । हे भाई ! जिस मनुष्य पर कृपा के घर परमात्मा ने कृपा की निगाह की सतिगुरु ने उसे परमात्मा के नाम जपने की दाति बख्श दी ।

कलिजुग उधारिआ गुरदेव । मल मूत मूड़ जि मुघद होते सभि लगे तेरी सेव ।1। रहाउ ।

अर्थः- हे सतिगुरु ! तूने तो कलियुग को भी बचा लिया है जिसे और युगों से बुरा समझा जाता है, भाव जो भी पहले गंदे व मूर्ख थे वह सारे तेरी सेवा में आ के लगे हैं तेरी बताई प्रभु की सेवा भक्ति करने लग पड़े हैं ।

तू आपि करता सभ स्रिसटि धरता सभ महि रहिआ समाई । धरम राजा बिसमाद होआ सभ पई पैरी आई ।2।

अर्थः- हे प्रभु ! तू स्वयं सारी सृष्टि को पैदा करने वाला है तू स्वयं ही सारी सृष्टि को आसरा देने वाला है, तू स्वयं ही सारी सृष्टि में व्यापक है फिर कोई युग अच्छा कैसे ? और कोई युग बुरा कैसे ? चाहे इस कलियुग को चारों युगों से बुरा कहा जाता है, फिर भी धर्मराज हैरान हो रहा है कि गुरु की कृपा से विकारों से हट के सारी लुकाई तेरे चरणों में जुड़ रही है । सो, अगर पुराने विचारों की तरफ भी जाएं तो भी ये कलियुग बुरा युग नहीं, और ये युग जीवों को बुरे कर्मों की ओर नहीं प्रेरता ।

सतजुग त्रेता दुआपर भणीऐ कलिजुग ऊतमो जुगा माहि । अहि कर करे सु अहि कर पाए कोई न पकड़ीऐ किसै थाई ।3।

(5-406)

अर्थः- हे भाई ! सतियुग को, त्रेते को, द्वापर को अच्छा युग कहा जाता है पर, प्रत्यक्ष दिख रहा है कि बल्कि कलियुग सारे युगों में श्रेष्ठ है क्योंकि इस जुग में जो हाथ कोई कर्म करता है, वही हाथ उसका फल भुगतता है । कोई मनुष्य किसी और मनुष्य की जगह विकारों के कारण पकड़ा नहीं जाता ।

- नरक घोर बहु दुख घणे अकिरतघणा का थान । तिनि प्रभि मारे नानका होइ होइ मुए हराम ।1।

अर्थः- अकृतज्ञ मनुष्य उस प्रभु द्वारा मारे हुए होते हैं, बहुत भारे दुख रूप घोर नर्क उनका ठिकाना है । हे नानक ! इन दुखों में वे ख्वार हो हो के मरते हैं ।

अवखध सभे कीतिअन निंदक का दार नाहि । आपि भुलाए नानका पचि पचि जोनी पाहि ।2।

अर्थः- सारे रोगों की दवा उस प्रभु ने बनाई है भाव, हो सकती है पर निंदकों के निंदा - रोग का कोई इलाज नहीं । हे नानक ! प्रभु ने खुद वह भुलेखे डाले हुए हैं इस अपने किए के अनुसार निंदक खप - खप के जूनियों में पड़ते हैं ।

तुसि दिता पूरै सतिगुरु हरि धन सच अखुट । सभि अंदेसे मिट गए जम का भउ छुट ।

अर्थः- जिन मनुष्यों को पूरे सतिगुरु ने प्रभु का सच्चा और ना खत्म होने वाला धन प्रसन्न हो के दिया है, उनके सारे फिक्र मिट जाते हैं और मौत का डर दूर हो जाता है ।

काम क्रोध बुरिआईआं सगि साधू तुट । विण सचे दूजा सेवदे हुइ मरसनि बुट ।

अर्थः- उनके काम - क्रोध आदि पाप संतों की संगति में समाप्त हो जाते हैं पर जो मनुष्य सच्चे हरि के अलावा किसी और की सेवा करते हैं, वह बोट हो के भाव, निआसरे हो के मरते हैं ।

नानक कउ गुरि बखसिआ नामै सगि जुट । (5-315)

अर्थः- हे नानक ! जिस मनुष्य पर सतिगुरु के द्वारा प्रभु ने बख्शिश की है वह केवल नाम में जुटा हुआ है ।

• निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई सतिगुर की सेवा लाइ । सतिगुर की सेवा उत्तम है भाई राम नामि चित लाई ।1।

अर्थः- हे भाई ! गुणों से वचित जीवों को सतिगुरु की सेवा में लगा के परमात्मा खुद ही बख्श लेता है । हे भाई ! गुरु की शरण सेवा बड़ी श्रेष्ठ है, गुरु शरण आए मनुष्य का मन परमात्मा के नाम में जोड़ देता है ।

हरि जीउ आपे बखसि मिलाई । गुणहीण हम अपराधी भाई पूरै सतिगुरि लए रलाई । रहाउ ।

अर्थः- हे भाई ! हम जीव गुणों से वचित हैं, विकारी हैं । पूरे गुरु ने जिन्हें अपनी संगति में मिला लिया है, उनको परमात्मा खुद ही मेहर करके अपने चरणों में जोड़ लेता है ।

कउण कउण अपराधी बखसिअन पिआरे साचै सबदि वीचारि । भउजल पारि उतारिअन भाई सतिगुर बेड़ै चाड़ि ।2।

अर्थः- हे प्यारे ! परमात्मा ने अनेक ही अपराधियों को गुरु के सच्चे शब्द के द्वारा आत्मिक जीवन की विचार में जोड़ के माफ कर दिया है । हे भाई ! गुरु के शब्द जहाज में चढ़ा के उस परमात्मा ने अनेक जीवों को संसार समुंदर से पार लंघाया है ।

मनूरै ते कंचन भए भाई गुरु पारस मेलि मिलाइ । आप छोडि नाउ मनि वसिआ भाई जोती जोति मिलाई ।3।

अर्थः- हे भाई ! जिन मनुष्यों को पारस गुरु अपनी संगति में मिला के प्रभु चरणों में जोड़ देता है, वे मनुष्य सड़े हुए लोहे से सोना बन जाते हैं । हे भाई ! सवै भाव त्याग के उनके मन में परमात्मा का नाम आ बसता है । गुरु उनकी तवज्जो को प्रभु की ज्योति में मिला देता है ।

हउ वारी हउ वारणै भाई सतिगुर कउ सद बलिहारै जाउ ।
नाम निधान जिनि दिता भाई गुरमति सहजि समाउ ।4।

अर्थः- हे भाई ! मैं कुर्बान जाता हूँ, मैं बलिहार जाता हूँ, मैं गुरु से सदा ही सदके जाता हूँ । हे भाई ! जिस गुरु ने मुझे परमात्मा का नाम खजाना दिया है, उस गुरु की मति ले के मैं आत्मिक अडोलता सहज अवस्था में टिका रहता हूँ ।

गुर बिन सहज न ऊपजै भाई पूछहु गिआनीआ जाई ।
सतिगुर की सेवा सदा करि भाई विचहु आप गवाई ।5।

अर्थः- हे भाई ! आत्मिक जीवन की सूझ वाले मनुष्यों को जा के पूछ लो, यही उत्तर मिलेगा कि गुरु की शरण पड़े बिना मनुष्य के अंदर आत्मिक अडोलता पैदा नहीं हो सकती । इस वास्ते, हे भाई ! तू भी अपने अंदर से स्वै भाव वाला अहंकार दूर करके सदैव गुरु की सेवा किया कर ।

गुरमती भउ ऊपजै भाई भउ करणी सच सार । प्रेम पदारथ पाइए भाई सच नाम आधार ।6।

अर्थः- हे भाई ! गुरु की मति पर चलने से मनुष्य के अंदर परमात्मा के लिए डर - अदब पैदा होता है । अपने अंदर डर - अदब पैदा करना ही करने योग्य काम है । ये काम सदा - स्थिर रहने वाला है, यही काम सबसे श्रेष्ठ है । हे भाई ! इस डर - अदब की इनायत से परमात्मा के प्यार का कीमती धन प्राप्त हो जाता है, परमात्मा का सदा - स्थिर नाम जिंदगी का आसरा बन जाता है ।

जो सतिगुर सेवहि आपणा भाई तिनकै हउ लागउ पाई ।
जनम सवारी आपणा भाई कुल भी लई बखसाई ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य अपने गुरु का आसरा लेते हैं, मैं उनके चरणों में लगता हूँ । इस तरह मैं अपना जीवन सुंदर बना रहा हूँ, मैं अपने सारे खानदान के लिए भी परमात्मा की कृपा प्राप्त कर रहा हूँ ।

सच बाणी सच सबद है भाई गुर किरपा ते होई । नानक नाम हरि मनि वसै भाई तिस बिघन न लागै कोई ।

(3-638)

अर्थः- हे भाई ! गुरु की कृपा से सदा स्थिर हरि - नाम हृदय में आ बसता है, महिमा की वाणी हृदय में आ बसती है, महिमा का शब्द प्राप्त हो जाता है । हे नानक ! कह हे भाई ! गुरु की कृपा से जिस मनुष्य के मन में परमात्मा का नाम बस जाता है, उसको जीवन यात्रा में कोई मुश्किल नहीं होती ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"